उत्तरवैदिक अवस्था

- क्षेत्र - गंगा-यमुना दोआब – प० उ०प्र० ; अंतिम अवस्था में पूर्वी उ० प्र० (कोसल) और उ० बिहार (विदेह) में प्रसार
- महाभारत
- हस्तिनापुर की खुदाई से कच्ची संरचनाएँ मिली हैं; पकी ईंट का अभाव; ग्रंथों में नगर शब्द का प्रयोग लेकिन मंद आभास
- लोहे का प्रयोग — श्याम या कृष्ण अयस
- कृषि (a) मुख्य जीविका ; शतपथ ब्राह्मण में हलों संबंधी अनुष्ठान का वर्णन – सीता के पिता और विदेह के राजा जनक ने हल चलाया था, कृष्ण के भाई बलराम को हलधर की संज्ञा दी गई
  - (b) लोहे के कृषि औज़ार कम पाए गए हैं। काठ के फाल वाले हल के प्रयोग के कारण कृषक अत्यधिक अन्न नहीं उपजा सके और अन्य व्यवसाय से जुड़े लोगों की आवश्यकता की पूर्ति न कर सके। नगर के उदय में हाथ नहीं बंटा सके।
  - (c) चावल और गेहूँ मुख्य फसलें थी। (व्रीहि)
  - (d) प्राकृतिक गोबर खाद और ऋतुओं के ज्ञान का कृषि-प्रक्रिया में उपयोग

शिक्षा - उपनयन संस्कार — ऊपर के तीन वर्ण (द्विज) के लिए

जीवन - कृषिजीवी और स्थिरवासी

उत्तर वैदिक कालीन राज्यव्यवस्था -

(1) सभा और समिति का वर्चस्व कम और राजकीय प्रमुख की स्थापना
↳ राजा शक्तिशाली
(2) सभा में स्त्रियों का प्रवेश निषिद्ध
(3) "राष्ट्र" शब्द का प्रयोग
(4) कबीले के जगह प्रदेश का महत्त्व
(5) राजा का पद आनुवंशिक - ज्येष्ठ पुत्र को — कर्मकांड के विधान के कारण अत्यधिक शक्तिशाली
राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ, वाजपेय यज्ञ (रथदौड़)
(6) संग्रहीतृ – कर का संग्रह करने वाला हालांकि करारोपण निश्चित एवं नियमित नहीं ; भागदुघ – कर संग्राह
(7) अधिकारी - पुरोहित, सेनापति, पटरानी आदि [उच्च स्तर का प्रशासन]
ग्राम सभा [निम्न स्तर का प्रशासन]
↙
स्थानीय वाद-विवाद का फैसला

Scanned with CamScanner

(8) स्थायी सेना का अभाव – युद्ध के समय भर्तियाँ

सामाजिक संगठन

ब्राह्मण – अनुष्ठानिक महत्त्व के कारण शक्ति में वृद्धि } राजस्व की वसूली
क्षत्रिय
वैश्य – राजस्व चुकाना
शूद्र

- ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य – उपनयन संस्कार के अधिकारी / वैदिक मंत्रों के साथ जनेऊ धारण का अनुष्ठान कर सकते थे

- उत्तर वैदिक काल में लिखा गए एक वैदिक ग्रंथ ऐतरेय ब्राह्मण के अंतर्गत –
  (a) ब्राह्मण जीविका चाहने वाला और दान लेने वाला है, लेकिन राजा कभी चाहे उसे हटा सकता है
  (b) वैश्य राजस्व का देनदार है, लेकिन राजा जब चाहे उसका दमन कर सकता है
  (c) शूद्र अन्य तीन वर्णों का सेवक है और वे जब चाहे उसे पीट सकते हैं

- उत्तर वैदिक काल में भी वर्णभेद अधिक प्रबल नहीं –
  (a) कई सार्वजनिक अनुष्ठानों में शूद्र, मूल आर्यजातीय कबीलों के बचे हुए सदस्यों की हैसियत से भाग लेते थे
  (b) शिल्पियों में रथकार आदि का स्थान ऊँचा था और उन्हें यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार था

- गोत्र प्रथा का प्रचलन प्रबल
- पूर्वपुरुषों की पूजा
- गोत्र प्रथा की स्थापना – एक ही मूल पुरुष से उत्पन्न लोगों का समुदाय। गोत्र बहिर्विवाह की प्रथा चल पड़ी। एक ही गोत्र के बीच आपस में विवाह निषिद्ध
- उत्तर वैदिक ग्रन्थों में तीन आश्रमों का उल्लेख है। अंतिम या चतुर्थ आश्रम उत्तर वैदिक काल में सुप्रतिष्ठित नहीं हुआ था हालांकि संन्यास अज्ञात नहीं था

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास
ब्रह्मचर्य → छात्रावस्था
वानप्रस्थ → वनवासावस्था
संन्यास → सांसारिक जीवन से विरक्ति

स्त्रियों की स्थिति –
(i) गिरावट
(ii) हालांकि कुछ महिलाओं ने शास्त्रार्थों में भाग लिया और कुछ रानियां पति के राज्याभिषेक अनुष्ठानों में साथ रहीं
(iii) सभा में प्रवेश निषिद्ध
(iv) ऐतरेय ब्राह्मण – पुत्री ही सभी दुःखों का स्रोत है और पुत्र ही परिवार का रक्षक
(v) मैत्रायणी संहिता – स्त्री को पासा एवं सुरा के साथ तीन प्रमुख बुराईयों में गिना गया है
(vi) वेद पढ़ने के अधिकार से वंचित
(vii) बहुपत्नी विवाह
(viii) इस काल के ग्रंथों में सती शब्द एक प्रतीकात्मक शब्द था क्योंकि विधवाओं के पुनर्विवाह (नियोग) का प्रचलन था

देवता, अनुष्ठान, दर्शन

(1) इन्द्र और अग्नि प्रमुख नहीं रहे इनकी जगह सृजन के देवता "प्रजापति" को स्थान मिला
(2) पशुओं के देवता "रुद्र" की महत्ता बढ़ी
(3) पालक और रक्षक – "विष्णु"
(4) मूर्ति पूजा के आरंभिक आभास

Scanned with CamScanner

(5) कुछ वर्णों के अपने देवता हो गए। उदाहरणस्वरूप "पूषन" को पशुओं की रक्षा करने वाला (G.) माना जाता था। शूद्रों का देवता हो गया।

(6) स्तुतिपाठ के साथ यज्ञ का महत्व बढ़ा
↳ सार्वजनिक और घरेलू

(7) पशुओं की बलि बड़े पैमाने पर

(8) यज्ञ करने वाला यजमान कहलाता था और यज्ञ का फल बहुत कुछ इस पर निर्भर माना जाता था कि यज्ञों में मंत्रों का उच्चारण कितनी शुद्धता से किया गया।

(9) इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता कि यज्ञ के पीछे धन-लोलुपता की भावना रही होगी।
उदाहरण- राजसूय यज्ञ कराने वाले पुरोहित को दक्षिणा में 240,000 गायें मिलती थीं

( ) दक्षिणा में सामान्यतः गायों के साथ-साथ सोना, कपड़ा और घोड़े भी दिए जाते थे किंतु यज्ञ की दक्षिणा में भूमि का दिया जाना प्रचलित नहीं था।

(10) वैदिककाल के अंतिम दौर में पुरोहितों के प्रभुत्व के विरुद्ध उपनिषद् का संकलन शुरु होने लगा।